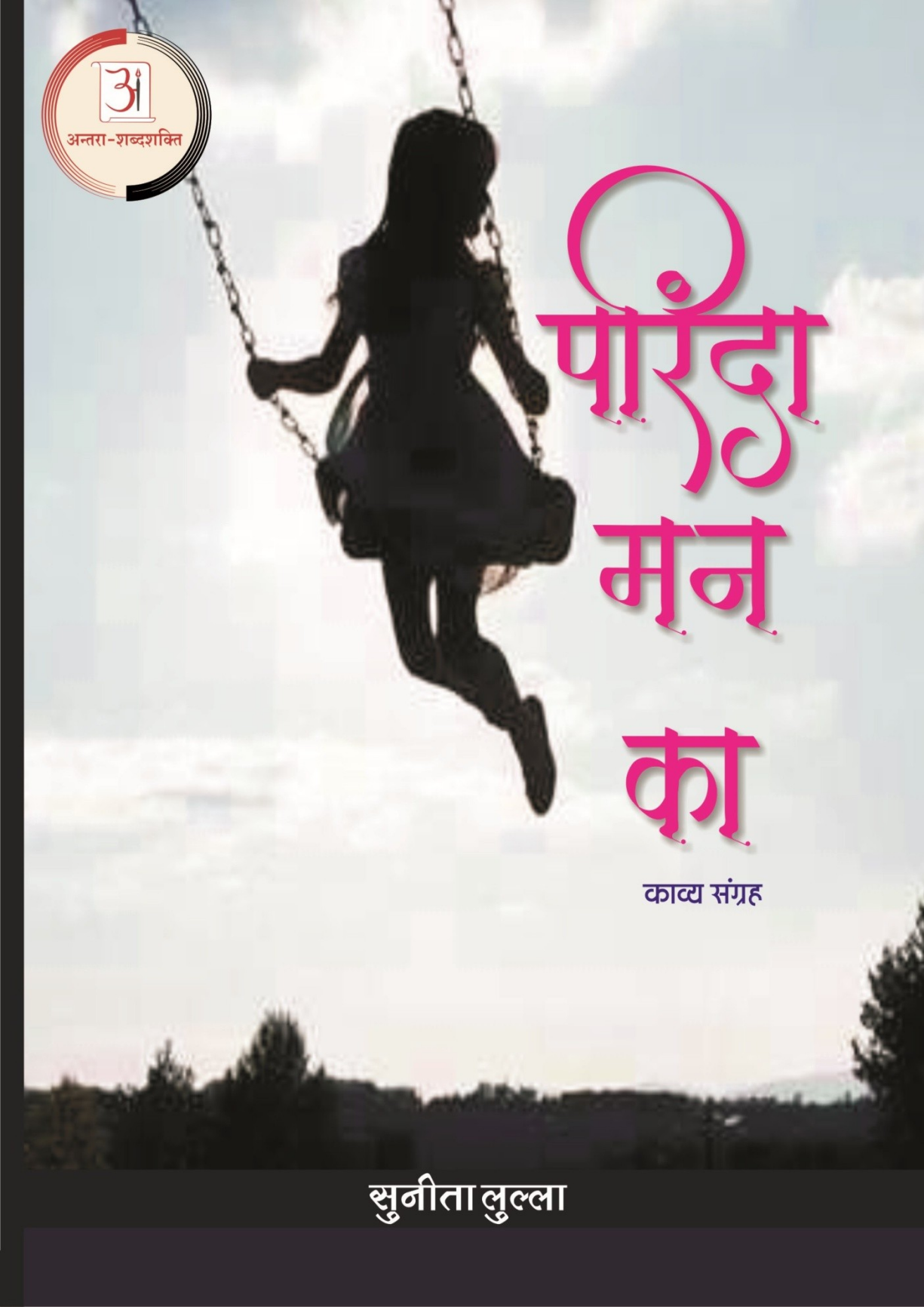

अन्तरा-शब्दशक्ति

परिंदा मन का

काव्य संग्रह

सुनीता लुल्ला

परिन्दा मन का

(काव्य संग्रह)

सुनीता लुल्ला

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-015-5"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- सुनीता लुल्ला
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
PARINDA MANN KA BY SUNITA LULLA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	प्रस्तावना	5
1.	परिन्दा मन का	7
2.	मिसाल-ए-धूप	8
3.	कुछ भी नहीं	9
4.	जीते थे दिल से	10
5.	कोई अरमाँ नहीं	11
6.	आस्मानी सारे चेहरे	12
7.	कैसे मेरे घर आयेंगे	13
8.	वो चाँद	14
9.	ख़्वाब में	15
10.	कुछ हम बदलें, कुछ तुम बदलो	16
11.	बरसों	17
12.	ख्वाब अपने भी	18
13.	ढाई अक्षर हो जाना	19
14.	तीरगी का सफ़र	20
15.	बात से बात बड़ी	21
16.	रात भी बस अभी ढली	22
17.	चाँद धरती पे उतर आयेगा	23
18.	हमें क्या थी ख़बर	24

19. कुबूल 25
20. अरमान जले 26
21. वो इमारत बुलंद थी 27
22. सारी दुनिया 28
23. मुहब्बत तर्क 29
24. कलम का दौर 30
25. लहना 31
26. इश्क दरिया अगन का है 32

प्रस्तावना

साथियों,

प्रस्तावना इसलिए लिखी जाती है कि हम बता सकें कि हमने यह पुस्तक क्यों लिखी और लिखी तो आपके सामने क्यूँ रख रही हूँ।

अब लिखी तो इसलिए कि समय समय पर मन में जो भी भाव आये लिखे, कभी गीत, कभी नवगीत, तो कभी ग़ज़ल, में ढाले, ऐसा जैसे कि आकाश से अनायास जल बरसे और सबकुछ भिगो दे, आकाश का मन हल्का हो जाय और धरती उस रस से सराबोर मन मगन हो जाय, बचपन से जो भी कविता गीत इत्यादि पढती थी तो लगता था कि ये तो मेरे ही मन की बात कवि ने कही है और बेहतर कही है।

बस इसलिए ही जो भी लिखा आपके सामने प्रस्तुत किया, ताकि आपको ये अपनी सी बात लगे, आपके मन को छू सके तो समझूँगी कि लिखना सार्थक हुआ।

ऐसा हुआ या नहीं बताइयेगा।

हृदय से आभार

सुनीता लुल्ला

परिन्दा मन का

अगन शिद्दत की लग जाती है, पत्थर दिल पिघलने में,
मगर फिर वक्त लगता है, उसी के साथ चलने में।

नहीं आसाँ कि हम किरदार अपना यूँ बदल ही दें,
कि सालों साल लग जाते हैं, इन्साँ दिल बदलने में।

बड़ी कूवत से हमने आरज़ू अपनी सम्हाली है,
“परिन्दा मन” का फिर भी आ ही जाता है मचलने में।

बड़ा नादान सा मजमा है, दिल की हसरतों का भी,
ये बच्चा है लगेगा वक्त इसको अब बहलने में।

ये मरहम है तुम्हारा साथ, ये मेरा नसीबा है,
बहुत ही दर्द होता है, चुभा काँटा निकलने में।

मुझे वादा है, सुबह का सितारा आज मेरा है,
जरा सी रात बाकी है, अभी ये रात ढलने में।

मिसाल-ए-धूप

मुझे बनाता है वो ही कभी मिटाता है,
हर इक तरह से मुझे रोज आजमाता है।

मैं अर्श से जो कभी मेह सी बरसती हूँ,
मिसाल-ए-धूप में वो फिर मुझे जलाता है।

मुझे ख़ुमार में वो गुदगुदा सा देता है,
वो इस तरह से मुझे बारहा जगाता है।

मैं रोकती हूँ खुद को, मैं तंगदिल तो नहीं,
मगर वो है कि मेरे हौसले बढ़ाता है।

मैं जिन्दगी के हिसाबों में निरी जाहिल हूँ,
मुझे घटाता है जालिम, कभी बढ़ाता है।

मुहब्बतों के कोई मायने नहीं होते,
मगर वो फिर भी कई मायने सिखाता है।

मैं दूर जा के भी उससे जुदा नहीं होती,
एक एहसास बन के वो मुझे लुभाता है।

कुछ भी नहीं

आपकी बात रही बात गिला कुछ भी नहीं,
ख़त्म है आज मुलाकात, रहा कुछ भी नहीं।

आपने बात कहाँ से थी कहाँ पहुँचाई,
हम ही बैठे रहे ख़ामोश कहा कुछ भी नहीं।

आज रूदादे-सफ़र लिखती है ख़ामोश कलम,
बात करते नहीं जज़्बात, सिला कुछ भी नहीं।

तुम ही आकर के जरा दर्द और दहकाओ,
ये मुहब्बत है यहाँ, इसकी दवा कुछ भी नहीं।

यूँ ही चलती रही, चलना था मुकद्दर मेरा,
मंजिलें ख़्वाब, हकीकत में मिला कुछ भी नहीं।

ये गनीमत है, इन आँखों में न आँसू आये,
ज़िन्दगी एक तबस्सुम के सिवा कुछ भी नहीं।

जीते थे दिल से

जीते थे दिल से, अब वो जियाले चले गये,
कहते थे सब जो सच, वो रिसाले, चले गये।

अख़बार नवीसों को सियासत ही खा गई,
जिन्दा था मुल्क जिनके हवाले, चले गये।

हाँ पेट अब भी भरते हैं, कुछ बेदिली से हम,
बचपन के माँ के अब वो निवाले चले गये।

हम गाँव छोड़ आये, शहरों के क्या हुए,
रातों की नींद, दिन के उजाले चले गये।

इकरार उनकी आँख का लब पे न आ सका,
रुख़ को घुमा के बात वो टाले चले गये।

टूटा है इस क़दर दिल, चुभता है हमीं को,
हर अक्स फिर भी उनका सम्हाले चले गये।

जीते थे आन-बान से जो सर को उठा के,
लिल्लाह याँ से कैसे निराले चले गये।

कोई अरमाँ नहीं

किसको वो बतलाते होंगे, कैसे ये बतलाते होंगे,
दर्द बरसते होंगे जब भी, यूँ ही वो पी जाते होंगे।

मुझसे मिलने को जब-जब भी,उनका मन ये करता होगा,
खुद में ही वो मुझे ढूँढ कर, खुद को ही तो भाते होंगे।

बस्ती-बस्ती चाँद से उगते, बस्ती-बस्ती गाते है,
तारों में हर रात चमककर, शबनम में गिर जाते होंगे।

कोई अरमाँ नहीं मुकम्मल, सारे ख़्वाब अधूरे हैं,
बार-बार जो चोट लगे तो, खुद को ही सहलाते होंगे।

हर टूटा सपना चीखे तो, आईना हर बार गिरे,
टुकड़े-टुकड़े जीते हैं, टुकड़े ही मर जाते होंगे।

और मुकद्दर एक बार जो उन पर भी मुस्काता होगा,
उसी एक पल में वो जी कर, खुद पे तो इतराते होंगे।

आसमानी सारे चेहरे

आसमानी सारे चेहरे हो गये,
चाँद के, तारों के पहरे हो गये।

आँख से हटती नहीं तस्वीर वो,
रंग जिसके सारे गहरे हो गये।

हाँ मगर वो एक ऐसा ख़्वाब था,
फ़िक्र के उस पर भी पहरे हो गये।

चक्र जीवन का चला ऐसी डगर,
पत्थरों पे पहिये ठहरे हो गये।

कुछ फ़रिश्तों ने सुनी आवाज़ वो,
हाय पर वो भी थे बहरे हो गये।

लौट जायेंगे चलो घर आज हम,
दिन बहुत अब याँ पे ठहरे हो गये।

कैसे मेरे घर आयेंगे

कैसे मेरे घर आयेंगे,
क्या कोई रस्ता पायेंगे।

बात कोई न कोई कह कर,
हम खुद को ही बहलायेंगे।

चोट लगे अब देर हुई है,
फिर भी खुद को सहलायेंगे।

ऐसा ही होता है जीवन,
बीती बातें दोहरायेंगे।

कहना कुछ है, करना कुछ है,
हम भी नेता कहलायेंगे।

कभी-कभी ऊँची बिल्डिंग पे,
हम भी झंडा फहरायेंगे।

छोड़ो यारो रहने दो सब,
सच में इससे क्या पायेंगे।

शाम ढली है, बहुत हो गया,
चलो लौट कर घर जायेंगे।

वो चाँद

वो चाँद आस्माँ में था, कुछ यूँ घटा-घटा,
बच्चा खड़ा हो माँ के पास, ज्यूँ डरा-डरा।

खिड़की से झांक-झांक के हम देखते रहे,
गायब था, फिर भी हमको लगा बस, दिखा-दिखा।

सारे निशाने चूक गये, कोशिशें मगर,
कहती रहीं कि अब वो लगा, बस लगा-लगा।

इक डोर पे चढ़ी सी पतंग जिन्दगी रही,
कुछ हादसों से उसका वो धागा कटा- कटा।

यूँ दिखने को सालिम है, हमारा ये मुल्क भी,
पर ग़ौर से देखो तो लगे, ये बँटा-बँटा।

नक्शा ये हिन्द का है और साथ में लंका,
लगता है जैसे वो भी हो कोई लुटा-लुटा।

हम हैं किताब ए ज़िन्दगी, तुम ख़त की तरह हो,
हर लफ़्ज़ आँसुओं से मगर है मिटा - मिटा।

ख़्वाब में

दिल ने मुझसे, यूँ कहा था ख़्वाब में,
हो ले तू भी ख़ुश ज़रा सा, ख़्वाब में।

सुबह होगी, गुम कहीं हो जायेगा,
रात चमका जो सितारा, ख़्वाब में।

ज़िन्दगी के मायने समझा गया,
मिल के वो मुझसे दुबारा, ख़्वाब में।

ढूँढती हूँ वो ही सब कुछ रात को,
जो नहीं होता हमारा, ख़्वाब में।

जी रहा हर शख़्स अपनी ज़िन्दगी,
ख़्वाब ये ही है सुहाना, ख़्वाब में।

हर तरह ख़ुशहाल सी दुनिया दिखी,
दिख गया है आज क्या-क्या, ख़्वाब में।

तेरी दुनिया, तेरे वादे और तू,
कर रही हूँ, यों गुज़ारा, ख़्वाब में।

कुछ हम बदलें, कुछ तुम बदलो

कुछ हम बदलें, कुछ तुम बदलो, बातें न बनाओ, समझे ना।
दोनों को यहीं पर रहना है, अब छोड़ न जाओ, समझे ना।

ये घर जो हमारा साझा है, अपनी ये जिम्मेदारी है।
मैने इसकी बुनियाद धरी, तुम साथ निभाओ, समझे ना।

तुम बस बाहर ही रहते हो, हम पर क्या गुज़रती है सोचो।
मैनें दीवारें चुन दीं हैं, तुम द्वार लगाओ, समझे ना।

खाना-पीना, चूल्हा चौका, कपड़े बासन क्या मेरा है,
सब करते मैं थक जाती हूँ, तुम हाथ बँटाओ , समझे ना।

मैं जब तक सब्ज़ी काटूँगी तुम पानी भर कर ले आना,
मैं आटा-वाटा गूँथूंगी तुम दाल चढाओ, समझे ना।

माना आकाश में चंदा है, तारे भी कुछ-कुछ कहते हैं।
ऐसे में जाग गया बच्चा उसको बहलाओ, समझे ना।

जीवन है सुख-दु:ख की सरगम, पर गीत अधूरा है अब तक,
साज़ों को मैने छेड़ दिया, तुम तान उठाओ, समझे ना।

बरसों

तेरी फ़िराक में थी, ठहरी बहार बरसों,
करते रहे तुझी पे, ये जाँ निसार बरसों।

अब तो मलाल है, ये सब खो गयीं बहारें,
बेसाख़्ता पुकारा, दीवानावार बरसों।

वो दिल का जाब्ता था, हम रह गये अकेले,
कोई नहीं बनाया, यूँ ग़म गुसार बरसों।

कोई अश्क भी नही अब, आँखों में आ सकेगा,
दिल ने दबा लिया है, हर इक ग़ुबार बरसों।

तेरे प्यार की जो मय थी, हमने लगाई लब से,
हैं आज तक नशे में, चढ़ता ख़ुमार बरसों।

ख्वाब अपने भी

ख्वाब अपने भी ऊँची उड़ानों के थे,
पर नसीबा सदा बायबानों के थे।

फ़र्ज हमने निभाये सभी उम्र भर,
हौसले भी हमारे जवानों के थे।

आये हम न नज़र रोशनी में कभी,
हम तो पत्थर सदा पायदानों के थे।

आज दाना नहीं और पानी नहीं,
हम परिंदे उन्हीं की मचानों के थे।

क्या अदालत कभी देख पायेगी कल,
झूठ छुप के, जो उनके बयानों के थे।

छू गये जो ख़ुदाई की बुनियाद को,
वो दुआऐ-असर बेजुबानों के थे।

एक अरसा रहे जलते धरती तले,
हम भी हीरे उन्हीं की खदानों के थे।

आज टूटे पड़े हैं सड़क पर कहीं,
कल जो टुकड़े उन्हीं के मकानों के थे।

ढाई अक्षर हो जाना

तेज हवाओं को लेकर के, सागर में घर हो जाना,
दरिया-दरिया मौजें मिल कर, एक समन्दर हो जाना।

कभी-कभी अच्छा लगता है, मूरत बन कर ढल जायें,
और कभी है मन में आता, खुद का पत्थर हो जाना।

हमने दुनियादारी सीखी, खाना-पीना सीख गये,
मन की मौजें तब कहती हैं, पंछी के पर हो जाना।

मौसम के जैसा करते हैं, कितने रंग बदलते हैं,
और परिन्दों से सीखा है, एक कबूतर हो जाना।

अपनी जिद पर आ जायें तो सागर सारे पी जायें,
मन को पर अच्छा लगता है, दामन का तर हो जाना।

एक कलम हाथों में लेकर, जो जी चाहे लिख लेना,
लेकिन और बड़ा होता है, ढाई अक्षर हो जाना।

तीरगी का सफ़र

तीरगी का सफ़र वो भी करता रहा,
वो निकलता रहा और ढलता रहा।

नींद उसकी भी आँखों से यूँ दूर थी,
हर सुबह तक वो करवट बदलता रहा।

तल्खियों ने उतारी जो उसकी नज़र,
आग सीने में वो ले के जलता रहा।

मैंने उसको कभी भी पुकारा न था,
साथ फिर भी वो हर रात चलता रहा।

मैं ही मुझमें कभी भी न हाजिर रही,
रूह में, जिस्म में वो ही पलता रहा।

रेत साहिल की मुझसे सदा दूर थी,
मेरा दरिया भँवर में सिमटता रहा।

वो सुकूँ जो मुझे न मिला उम्र भर,
मन में चुभता रहा और खलता रहा।

बात से बात बड़ी

बात से बात बड़ी होती है,
इक कयामत सी खड़ी होती है।

कौन रोकेगा ऐसी आँधी को,
सबको अपनी ही पड़ी होती है।

एक से एक जुड़ता जाता है,
कितनी लम्बी वो कड़ी होती है।

आँख में आँख मिला कर देखो,
एक तस्वीर जड़ी होती है।

एक सैलाब बह के आता है,
वो मुहब्बत की घड़ी होती है।

एक हल्की सी छुवन ऐसे में,
कोई जादू की छड़ी होती है।

उसकी आँखों से मेरी आँखों तक,
एक मोती की लड़ी होती है।

रात भी बस अभी ढली

रात भी बस अभी ढली सी है,
आँख भी बस अभी लगी सी है।

है यकीं लौट कर तो आओगे,
आँख में फिर भी कुछ नमी सी है।

यूँ मैं होती नहीं कभी तन्हा,
आज पर आपकी कमी सी है।

साँस तो अब भी चल रही,
लेकिन..
ज़िन्दगी जाने क्यों रुकी सी है।

ख़ुशनुमा फूल ख़ुश नहीं दिखते,
क्यूँ चमन में लगे ग़मी सी है।

क्यूँ वो एहसास में नहीं गर्मी,
बर्फ़ जैसी कहीं जमी सी है।

चाँद धरती पे उतर आयेगा

लब पे तू बात इक सयानी रख,
और बातों के कुछ मआनी रख।

न छलक जाऊँ आँख से तेरी,
अपनी पलकों को सायबानी रख।

धूप कितनी भी हो मगर फिर भी,
अपनी धरती को जरा धानी रख।

घर तेरा हर ख़ुशी से लहकेगा,
उसमें बिटिया कभी सयानी रख।

चाँद धरती पे उतर आयेगा,
तू जरा थालियों में पानी रख।

ये नदी उम्र की रहे बहती,
इसकी लहरों में कुछ रवानी रख।

हाँ उसूलों पे ज़िन्दगी चल तू,
पर कभी मन की भी तो मानी रख।

इम्तहानी जो वक्त आ जाये,
सच की फिर भी सदा बयानी रख।

हमें क्या थी ख़बर

हमें क्या थी ख़बर किस-किस ने अफ़साना बना डाला,
बिखेरे राज़ उल्फ़त के औ दीवाना बना डाला।

कई एहसास जो गलियों में उनकी बस भटकते थे,
सुबक कर रो गये हैं, हमको वो शाना बना डाला।

किया जादू कलम ने इस क़दर बदली है हर काया,
किसी की आँख को शायर ने पयमाना बना डाला।

न सोचा हश्र क्या होगा, हमारी सोच पर इसका,
उसे जो रूप भाया बस वो मनमाना बना डाला।

हमारे दिल का वीराना बड़ी मुद्दत से यूँ ही था,
चले आये वो चुपके से, सनम खाना बना डाला।

नमाजें अब नहीं होतीं, इलाही क्या हुआ हमको,
किसी ने हम को तोड़ा और बुतख़ाना बना डाला।

कुबूल

कभी आया तो, कभी जाया कर,
बस बहाने न तू बनाया कर।

एक मुस्कान रहे तारी बस,
रोज चेहरे को यूँ सजाया कर।

तेरी छत पर सितारे आते हैं,
जी कभी उनका न दुखाया कर।

तेरे हँसने से फूल झरते हैं,
यूँ ही खुशबू सदा लुटाया कर।

मैं तेरी कोई नहीं हूँ फिर भी
मुझसे हर बात न छुपाया कर।

या तो खुल कर कुबूल कर ले तू,
या फिर इन्कार को नुमायाँ कर।

मुझसे इतनी जो पर्दादारी है,
आते जाते न मुस्कुराया कर।

मैं कभी मेह सी बरसती हूँ,
तू भी थोड़ा तो भीग जाया कर।

अरमान जले

आबरू आपकी इस तरह बचा ली मैंने,
बात मेरी न थी, पर फिर भी बना ली मैंने।

वो कबूतर जो कभी छत पे न आये थे मेरी,
उनके आने की ख़बर खुद ही उड़ा ली मैंने।

ख़ार दुनिया ने मेरी राह पे डाले अक्सर,
फूल कह-कह के यूँ ही बात छुपा ली मैंने।

मैं तो नादान थी, पर इश्क पशेमाँ न किया,
रह के खामोश ही हर बात सम्हाली मैंने।

आज अफ़सोस है, दावा भी नहीं कर पाई
यूँ ही अरमान जले, आग लगा ली मैंने।

वो इमारत बुलंद थी

इस मक़ाँ में कोई रहा ही नहीं,
दर्द दिल ने कभी सहा ही नहीं।

उसके चेहरे पे यूँ ख़ामोशी है,
जैसे उसने हो कुछ कहा ही नहीं।

मसअले सब धुआँ-धुआँ से उड़े,
गुफ़्तगू में भी कुछ रहा ही नहीं।

वो इमारत बुलंद थी इतनी,
बुर्ज़ उसका कभी ढहा ही नहीं।

सारे एहसास रेत में बदले,
उसपे दरिया कभी बहा ही नहीं।

वो मक़ाँ घर कहाँ से बन पाता,
उसमें आ के कोई रहा ही नहीं।

वो फ़कत जिस्म-जिस्म रह जाता,
दर्द जिस दिल ने हो सहा ही नहीं।

सारी दुनिया

कोई ऐसी नज़र नहीं मिलती,
जो न हो दर-ब-दर, नहीं मिलती।

सारी दुनिया है मेरी मुट्ठी में,
सिर्फ अपनी ख़बर नहीं मिलती।

क्या कलम फ़िर हमारी लिख पाती,
दर्द मंदी अगर नहीं मिलती।

सिर्फ इंसाफ़ ऐसी दौलत है,
ढूँढते हैं मगर नहीं मिलती।

दिल से जोड़े जो दिल के दरिया को,
कोई ऐसी नहर नहीं मिलती।

कोई रौशन ख़याल मिल जाये,
तीरगी है, सहर नहीं मिलती।

ज़िन्दगी की ग़ज़ल मुकम्मल हो,
कोई ऐसी बहर नहीं मिलती।

मुहब्बत तर्क

मुहब्बत तर्क करते हैं, इरादा छोड़ देते हैं,
चलो इक दूसरे को यूँ ही प्यासा छोड़ देते हैं।

कहाँ तक बात इसकी अपनी ताबानी पे ला पायें,
चलो इस दिल को मरने को तड़पता छोड़ देते हैं।

ये कैसी तिश्नगी है, जो तेरी आँखों में देखी है,
उसी को पी के देखें और दरिया छोड़ देते हैं।

हुई अक्सर इसी दुनिया में वादों की खिलाफ़त है,
मुकम्मल कर नहीं पाये तो आधा छोड़ देते हैं।

मशक्कत का हुनर जब हाथ की उंगली पे आ जाये,
वो पर्बत काट देते हैं या रस्ता छोड़ देते हैं।

कहाँ इंसाफ़ का कोई तराजू सच पे कायम है,
सज़ा मकतूल को, कातिल को जिन्दा छोड़ देते हैं।

दबा कर मुल्क का पैसा, समुन्दर पार जाये जो,
अदालत चलती रहती है, बकाया छोड़ देते हैं।

कसीदा पढ़ने जो जाये सनम की कारसाज़ी का,
मुकम्मल कब हुआ है, यूँ ही मिसरा छोड़ देते हैं।

कलम का दौर

सूख कर अब रह गयी है, हर नदी सोयी हुई,
जिन्दगी अब क्या मिलेगी, जिन्दगी सोयी हुई।

ये भटकती पीढ़ियाँ हैं, इनका होगा क्या हशर,
राह कैसे ढूँढ पायें रहबरी सोयी हुई।

मुल्क में वो दौर तारी, भूले हैं अपना पता,
कौन इनको अब जगाये, ये सदी सोयी हुई।

काश कोई फिर से आये छेड़ दे इक राग वो,
जाग कर फिर झूम जाये नग्मगी सोयी हुई।

इन अँधेरों से निकल कर वो उजाले आयेंगे,
झिलमिलाकर जी उठेगी, रोशनी सोयी हुई।

फिर कलम का दौर होगा, फिर अदब के हौसले,
रक्स में आ जायेगी ये शायरी सोयी हुई।

लहना

पास तू मेरे यूँ रहना ज़िन्दगी,
आँख से, फिर से न बहना ज़िन्दगी।

आज तक तेरा कहा हमने किया,
आज तू भी मान कहना ज़िन्दगी।

तेरी बुनियादों को फिर से है चुना,
रेत सी अब फिर न ढहना ज़िन्दगी।

सिर्फ जीना ही नहीं मक़सद मेरा,
तप के अब बनना है, गहना ज़िन्दगी।

है हमें इतिहास फिर से सरजना,
मैं कहानी का हूँ "लहना" ज़िन्दगी।

मैं ज़मी हूँ, मैं तो रुक सकती नहीं,
रात दिन है, काम चलना ज़िन्दगी।

सत्य की जो राह मैंने है चुनी,
झूठ की कोई न छलना ज़िन्दगी।

वक्त आयेगा अंधेरे का अगर
सूर्य सा होगा ही ढलना ज़िन्दगी।

लौट आऊँगी मैं फिर तेरे लिए,
मुझको फिर से यूँ ही मिलना ज़िन्दगी।

इश्क दरिया अगन का है

कैसे कर पाते हैं लोग यूँ मस्तियाँ,
जल रहीं हर तरफ़ कितनी ही बस्तियाँ।

फूल गुलशन के भी आज सूखे दिखे,
रंग वाली कहाँ उड़ गईं तितलियाँ।

ये हवाओं में कैसा ज़हर घुल गया,
आस्मानों पे जा के लगीं चिमनियाँ।

ये बदन भी मशीनी हुआ आजकल,
खून जम सा गया, खुश्क हैं धमनियाँ।

लुत्फ़ तारों के गिनने का खो ही गया,
सुबह तक आँख में आ गईं किर्चियाँ।

याद किसने किया बाद बरसों मुझे,
आ रहीं हैं तभी इस क़दर हिचकियाँ।

इश्क दरिया अगन का है, हम जानते,
एक दूजे की बन जायेंगे कश्तियाँ।

दाल रोटी के मसले हैं इतने तलख़,
अब वो गुम हो गईं प्यार की शोखियाँ।

लोग किसको सम्हालेंगे बरसों तलक,
जब मुहब्बत में लिखते नहीं चिट्ठियाँ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुनीता लुल्ला

जन्म - 02/09/1950, कोलकाता

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी, अंग्रेजी, बी.एड.

मो. - 9391173094

ई मेल - sunita.lulla2@gmail.com

विधा - पूर्ण रुपेण काव्य साधना, हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और सिन्धी में ... कविता, गीत, गजल, दोहे, मुक्तक इत्यादि।

कार्यक्षेत्र - व्यवसाय, 35 वर्ष शिक्षण में, 20 वर्ष प्रधानाध्यापिका, 5 वर्ष प्रबन्धिका, अप्रैल 2015 में सेवा निवृत्त। हैदराबाद से प्रकाशित 'सिन्ध क्रोनिकल' मासिक पत्रिकी सह संपादिका, ई पत्रिका 'गज़ल गुंजन' की संपादक मंडल सदस्य।

प्रकाशन - स्वयं का पुस्तक संग्रह हिन्दी और अंग्रेजी में ..।
हिन्दी में प्रथम काव्य संग्रह 'वो मै ही हूँ' मार्च 2016।
सिन्धी में गज़ल संग्रह 'खुशबू तुहिंजी यादुन जी' 2016।
हिन्दी गज़ल संग्रह 'कुछ रात कटे' 2017।
परिवर्तन के चक्रवात (गीत-नवगीत संग्रह)

सम्मान - साहित्य सेवा समिति, हैदराबाद से सम्मानित।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान इंदौर।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019।
सिंधी गज़ल सम्मान अमरावती पोएटिक प्रिज़्म, विजयवाड़ा साहित्य संगम संस्थान द्वारा 'उस्ताद शायर सम्मान' एवं रचनाऐं देश की साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-015-5

मूल्य- 60/-